मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

डॉ. श्याम सिंह गौर* और नीलम सिंह परिहार**

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में सरकार द्वारा संचालित मध्यान्ह भोजन योजना का अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करना है। अध्ययन हेतु उ0प्र0 राज्य के चित्रकूट जिले के पाँच विकासखण्डों में संचालित प्राथमिक विद्यालयों में से प्रत्येक विकासखण्ड से 02–02 विद्यालयों का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है तथा प्रत्येक विद्यालय से 10 विद्यार्थियों (5 छात्र + 5 छात्राएं) का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श के आधार पर किया गया है। प्रदत्तों का संकलन करने के लिये डॉ ए.के. सिंह तथा डॉ ए. सेन गुप्ता द्वारा निर्मित सामान्य शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (GACT-SG) तथा स्वनिर्मित मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। आंकड़ों के विश्लेशण द्वारा पाया गया है कि मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा है।

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के आरम्भ से ही मानव जीवन की तीन अत्यधिक महत्वपूर्ण आवश्यकताएं रही हैं– रोटी, कपड़ा और मकान। इन महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से सबसे महत्वपूर्ण रोटी अर्थात भोजन है। भोजन की आवश्यकता की पूर्ति के लिए मनुश्य ने क्या नहीं किया है। देश के निम्न आयवर्ग वाले व्यक्तियों के अधिकांश बच्चे प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। एक सर्वे द्वारा यह ज्ञात हुआ है कि आर्थिक रूप से पिछड़े और कमजोर परिवारों के 60 प्रतिशत बच्चे प्रातःकाल बिना भोजन किये विद्यालयों में पढ़ने जाते हैं, इनमें से 15.3 प्रतिशत बच्चे स्कूली शिक्षा पूर्ण करने से पूर्व ही विद्यालय छोड देते हैं। भोजन की इसी आवश्यकता को देखते हुए देश की स्वतंत्रता के बाद अनेक प्रयास किये गए हैं। इस विशम समस्या से उबरने हेतु सरकार ने अनेक प्रयास किये हैं। विभिन्न प्रदेशों की सरकारों ने अनेकों उपाय किये हैं जिनमें से एक उपाय विद्यार्थियों को दोपहर मे पका–पकाया भोजन दिया जाना है, इसे ही मध्यान्ह भोजन योजना का नाम दिया गया है।

शोधकर्ताओं द्वारा मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ा है?इसका अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शोधकार्य निरूद्देश्य नहीं किया जाता है क्योंकि इसमें समय और धन दोनों व्यय होते हैं। किसी भी शोधकार्य को आरम्भ करने से पूर्व उसकी उपादेयता आवश्यकता एवं महत्व को जानना अत्यन्त आवश्यक है। शोध अध्ययन करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि इस शोध अध्ययन से समाज और राश्ट्र को कितना लाभ होगा। भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्राथमिक शिक्षा में पोशण सहायता का राश्ट्रीय कार्यक्रम (National Programme of Nutritional support to primary education) 15 अगस्त 1995 को प्रारम्भ किया गया था, जिसके अन्तर्गत 6 से 14 वर्श आयु वर्ग के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के स्वास्थ्य स्तर में निरन्तर सुधार करना तथा मानसिक स्तर को बढाने के लिये मध्यान्ह भोजन उपलब्ध कराना था। यह भारत सरकार की अत्यन्त महत्वकांक्षी योजना थी, परन्तु इसका क्रियान्वन सही ढंग से नही हो रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन द्वारा यह जानने का प्रत्यत्न किया गया है कि प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कितना प्रभाव हुआ है।

समस्या कथन

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ताओं द्वारा चयनित समस्या इस प्रकार है– '' मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक

*सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म0प्र0)
**शोध छात्रा, शिक्षा शास्त्र, महात्मा गॉधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना (म0प्र0)

विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य

शोध के निम्न उद्देश्य निर्धारित किये गये है–

1. प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का मापन करना।
2. मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता, पौश्टिकता, वितरण व्यवस्था एवं निर्धारित मानकों के अनुसार भोजन प्रदान किये जाने का अध्ययन करना।
3. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन करना

शोध की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध में निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है–

1. मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
2. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध अध्ययन का परिसीमन

प्रस्तुत शोध को निम्नानुसार परिसीमित किया गया है–

1. **क्षेत्र परिसीमन–** प्रस्तुत शोध उ0प्र0 राज्य के चित्रकूट जिले तक ही सीमित है।
2. **समिष्ट परिसीमन–** प्रस्तुत शोध में उ0प्र0 राज्य के चित्रकूट जिले में संचलित समस्त सरकारी एवं अनुदान प्राप्त प्राथमिक विद्यालय अध्ययन के समिश्ट होंगे।
3. **न्यादर्श परिसीमन–** न्यादर्श के रूप में 10 प्राथमिक विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का (50 छात्र + 50 छात्राएं) यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण

शोध समस्या में आये तकनीकी शब्दों का परिभाशीकरण इस प्रकार किया गया है–

1. **मध्यान्ह भोजन योजना–** सरकारी तथा अनुदान प्राप्त प्राथमिक विद्यालयों में सरकार द्वारा दोपहर में विद्यार्थियों को जो पका–पकाया भोजन उपलब्ध कराया जाता है उसे ही मध्यान्ह भोजन योजना कहा जाता है।
2. **प्राथमिक विद्यालय–** प्रस्तुत शोध में प्राथमिक विद्यालयों का अर्थ उ0प्र0 राज्य के चित्रकूट जिले में संचालित सरकारी एवं अनुदान प्राप्त विद्यालयों से है जिनमें कक्षा एक से कक्षा आठ तक की शिक्षा प्रदान की जाती है।
3. **शैक्षिक उपलब्धि–** शोध समस्या में आये शब्द शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के विभिन्न विद्यालयी विशयों में उनकी शैक्षिक सम्प्राप्ति को शैक्षिक उपलब्धि माना गया है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ताओं द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में आंकडो के संकलन हेतु निम्न शोध उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यान्ह भोजन योजना– स्वनिर्मित प्रश्नावली
2. शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण– डॉ ए.के. सिंह तथा ए.सेन गुप्ता द्वारा निर्मित सामान्य शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण (GACT-SG) प्रयुक्त किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में उ0प्र0 राज्य के चित्रकूट जिले में संचालित सरकारी एवं अनुदान प्राप्त शोध कार्य हेतु चयनित 10 प्राथमिक विद्यालयों में से 100 विद्यार्थियों (50 छात्र + 50 छात्राएं) का यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी प्रविधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान
2. मानक विचलन
3. टी.–परीक्षण

आंकड़ों का विश्लेषण

मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन निम्न तालिकाओं द्वारा किया गया है।

1. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन–

तालिका क्रमांक – 1

कुल विद्यार्थियों की संख्या	मध्यान्ह भोजन योजना		शैक्षिक उपलब्धि		टी–परीक्षण
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
100	36.8	8.4	29.5	6.0	7.08

(df = N1 + N2 2 = 50 + 50 2 = 98)

तालिका क्रमांक–1 में 100 विद्यार्थियों के मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली पर प्राप्तांको का मध्यमान 36.8 एवं मानक विचलन 8.4 है। उक्त सारणी में शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 29.5 तथा मानक विचलन 6.0 है। विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान, मध्यान्ह भोजन योजना के मध्यमान से कम है तथा मानक विचलन भी शैक्षिक उपलब्धि का कम है। गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 7.08 है जो कि 0.01 विश्वास के स्तर 2.63 से अधिक है। आंकडों के विश्लेशण से स्पश्ट है कि मध्यान्ह भोजन योजना एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य अन्तर सार्थक है। अर्थात मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव परिलक्षित नहीं होता है।

2. छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन–

तालिका क्रमांक – 2

छात्राओं की संख्या	मध्यान्ह भोजन योजना		शैक्षिक उपलब्धि		टी–परीक्षण
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
50	38.1	8.6	28.7	7.2	5.94

(df = N1 + N2 2 = 25 + 25 2 = 48)

तालिका क्रमांक 2 में 50 छात्राओं के मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांको के मध्यमान क्रमशः 38.1 एवं 28.7 हैं, तथा मानक विचलन 8.6 एवं 7.2 है। छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त हुए प्राप्तांको का मध्यमान, मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांको से कम है। गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 5.94 है जो कि 0.01 विश्वास के स्तर 2.68 से अधिक है अतः स्पश्ट है कि मध्यान्ह भोजन योजना का छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड रहा है क्योंकि मध्यमानों के मध्य सार्थक अन्तर है।

3. छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का अध्ययन

तालिका क्रमांक – 3

छात्रों की संख्या	मध्यान्ह भोजन योजना		शैक्षिक उपलब्धि		टी–परीक्षण
	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान	मानक विचलन	
50	36.3	7.3	29.8	7.25	4.46

(df = N1 + N2 2 = 25 + 25 2 = 48)

उपरोक्त तालिका क्रमांक 3 में 50 छात्रों के मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली पर प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 36.3 तथा मानक विचलन 7.3 है एवं शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण पर प्राप्त प्राप्तांको का मध्यमान 29.8 एवं मानक विचलन 7.25 है। आंकड़ों के विश्लेशण से स्पश्ट है कि शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान एवं मानक विचलन मध्यान्ह भोजन योजना प्रश्नावली के मध्यमान एवं मानक विचलन से कम है। दोनो मध्यमानों पर गणना द्वारा प्राप्त टी का मान 4.48 है जो कि 0.01 विश्वास के स्तर 2.68 से अधिक है अतः स्पश्ट है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड रहा है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के परिणामों से मध्यान्ह भोजन योजना के यथार्थ का चित्रण किया गया है आंकडो के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ है कि मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नही पड़ रहा है। मध्यान्ह भोजन की गुणवत्ता पौष्टिकता, वितरण व्यवस्था तथा निर्धारित मानकों के अनुसार भोजन प्रदान किये जाने पर भी ध्यान नहीं दिया जाता है। शोध के मुख्य निष्कर्ष इस प्रकार हैं–

1. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

2. प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यान्ह भोजन योजना का कोई सकारात्मक प्रभाव परिलक्षित नही हो रहा है।
3. मध्यान्ह भोजन योजना का प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

Kalinger, F.N. (1983) Fundamental of Behavior Research, IInd Indian Reprint, New Delhi, Surjeet Publication.

कपिल, एच.के. (1985) ''अनुसंधान विधियां'', आगरा, भार्गव प्रकाशन।

Mittal, S.S. (1985), Impact of Mid-day meals programme, Enrolment and attendance of primary stage.

शर्मा, आर.ए. (1992) ''शिक्षा तकनीकी'' मेरठ, लायल बुक डिपो।

मध्यान्ह भोजन योजना (1995) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

कपिल, एच.के. (1998) ''सांख्यिकी के मूल तत्व'', आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।

Mid-Day Meals in Primary Schools (2004) Support group of the "right to food camping" for circulation at the world social forum (Mumbai Jan 2004).

मध्यान्ह भोजन योजना (2004) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।

तिवारी, सुभाश चन्द्र (2005–06) '' प्राथमिक स्तर पर मध्यान्ह भोजन योजना की क्रियान्वन समस्या का अध्ययन।'' लघु शोध प्रबन्ध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (म0प्र0)

Best, J.W. and James, Y. khan (2007) Research in Education IX "Addition, New Delhi, Pearson Printice hall.

पाण्डेय, बैजनाथ (2007) ''पूर्ण साक्षरता के लिए वरदानः मिड–डे मील'', मासिक पत्रिका–कुरूक्षेत्र, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली अंक 11

परिहार, नीलम सिंह (2008–09), ''मध्यान्ह भोजन योजना का क्रियान्वन।'' सतना जिले के प्राथमिक विद्यालयों के विशेश संदर्भ में, लघु शोध प्रबंध, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, (म0प्र0)

पुश्पद, नेहा (2008–09), ''मध्यान्ह भोजन का विद्यार्थियों के स्वास्थ्य एवं शैक्षणिक उपलब्धि स्तर पर पड़ने वाला प्रभाव। ''लघु शोध प्रबन्ध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (म0प्र0)

कौल, लोकेश (2009) '' शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली'', तृतीय पुर्नमुद्रण, नई दिल्ली, विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा0लि0।

Bharadwaj, Priyanka (2010) "Impact of Mid-day meal (MDM) programme on government primary school activities with special reference to district Gwalior" Ph. D. thesis, Jeewaji University, Gwalior (M.P.)

दीक्षित, मनीश कुमार (2011), ''मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम का मूल्यांकन अध्ययन।'' शोध प्रबंध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, (म0प्र0)

शर्मा, अंजना (2014) ''मध्यान्ह भोजन योजना का विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव : एक अध्ययन।'' शोध प्रबंध जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म0प्र0)